मोहन राकेश की कहानियाँ: यथार्थ और संवेदना

डॉ. आभा झा
एसिस्टेंट प्रोफेसर
दी भवानीपुर एजुकेशन सोसाइटी कॉलेज

सारांश (Abstract)
हिंदी साहित्य में नई कहानी आंदोलन के प्रमुख कहानीकारों में मोहन राकेश का महत्वपूर्ण स्थान है। उनकी कहानियाँ आधुनिक समाज की वास्तविकताओं को अत्यंत संवेदनशीलता के साथ व्यक्त करती हैं। विशेष रूप से उनकी कहानिओं में मध्यवर्गीय जीवन की समस्याएँ मानवीय संबंधों की जटिलता, आधुनिक मनुष्य का अकेलापन और मानसिक संघर्ष का प्रभावशाली ढंग से चित्रण हुआ है। मोहन राकेश ने अपने कथा साहित्य में बाहरी घटनाओं की अपेक्षा मनुष्य के आतंरिक अनुभवों को अधिक महत्व दिया है। उनकी कहानियों में पात्रों का आत्मसंघर्ष ,मानसिक द्वंद्व तथा अस्तित्वगत संकट स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। इस शोध-पत्र में मोहन राकेश की कहानियों में व्यक्त समकालीन यथार्थ और संवेदना के प्रमुखआयामों का विश्लेषण किया गया है। विशेष रूप से मध्यमवर्गीय जीवन, पारिवारिक संबंधों का विघटन,स्त्री-पुरुष संबंधों की जटिलता तथा आधुनिक शहरी जीवन की परिस्थितियों पर विचार किया गया है।

बीजशब्द (Keywords): मोहन राकेश, नई कहानी आंदोलन, यथार्थवाद, मानवीय संवेदना, मध्यवर्गीय जीवन, आधुनिक हिंदी कहानी

प्रस्तावना

हिंदी कहानी का विकास भारतीय समाज के बदलते परिवेश के साथ गहराई से जुड़ा हुआ है। प्रेमचंद के समय में कहानी का केंद्र सामाजिक समस्याएँ और सुधारवादी दृष्टिकोण था, परंतु स्वतंत्रता के बाद समाज में आए व्यापक परिवर्तनों ने साहित्य को भी प्रभावित किया।1950 के दशक में हिंदी साहित्य में 'नई कहानी आंदोलन' का उदय हुआ, जिसने कहानी को जीवन की वास्तविकताओं से जोड़ दिया ।इस आंदोलन के प्रमुख कथाकारों में मोहन राकेश का नाम अत्यंत सम्मान के साथ लिया जाता है। मोहन राकेश का जन्म 8 जनवरी 1972 ईस्वी में हुआ था .इन्होनें गद्य साहित्य की लगभग सभी विधाओं (कहानी,नाटक, उपन्यास) पर अपनी लेखनी चलाई है। उन्होंने अपने कहानियों के माध्यम से आधुनिक मनुष्य के जीवन में उपस्थित विडंबनाओं, संघर्षों और संवेदनात्मक अनुभवों को अत्यंत प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत किया है । उनकी कहानियों में जीवन की सच्चाई,मानवीय संबंधों की जटिलता तथा व्यक्ति के भीतर चल रहे मानसिक द्वंद्व का सूक्ष्म चित्रण मिलता है। मोहन राकेश की कहानियों में यथार्थ और संवेदना का गहरा संबंध दिखाई देता है। वे केवल सामाजिक परिस्थितियों का वर्णन नहीं करते , बल्कि उन परिस्थितियो के बीच जी रहे मनुष्य की भावनाओं, पीड़ाओं और आशाओं को भी गहराई से व्यक्त करते हैं ।

मोहन राकेश की कहानियों में समकालीन यथार्थ और संवेदना

समकालीन यथार्थ का अर्थ अपने समय के समाज, जीवन-स्थितियों और मानवीय अनुभवों के वास्तविक चित्रण से है। साहित्यकार अपने समय के परिवेश को अनुभव करता है और उसे रचनात्मक रूप में अभिव्यक्त करता है। मोहन राकेश की कहानियों में जीवन का वास्तविक चित्रण मिलता है। वे समाज की समस्याओं को आदर्शवादी दृष्टिकोण से नहीं देखते, बल्कि उन्हें उसी रूप में प्रस्तुत करते हैं जैसे वे वास्तव में हैं । मोहन राकेश की कहानियों में निरंतर बदलते भारतीय

समाज की झलक दिखाई देती है। आस पास का सामाजिक परिवेश ही उनकी कहानियों में सजीव रूप में उपस्थित है। मोहन राकेश की कहानियों में न तो आदर्श की कृत्रिम चमक है और न ही यथार्थ का अतिरंजित चित्रण। उनके यहाँ जीवन जैसा है वैसा ही प्रस्तुत होता है-अपने पूरे द्वन्द्व ,पीड़ा और संवेदना के साथ ।

उनकी कहानियों में विशेष रूप से आधुनिक मध्यवर्गीय जीवन का यथार्थ चित्रित हुआ है। मध्यवर्गीय व्यक्ति आर्थिक कठिनाइयों, सामाजिक अपेक्षाओं और मानसिक दबावों के बीच संघर्ष करता है। मोहन राकेश ने इन परिस्थितियों को अत्यंत सजीव ढंग से प्रस्तुत किया है। उनके कहानिओं के पात्र साधारण लोग होते हैं—कर्मचारी, शिक्षक, गृहिणी या छोटे-मोटे काम करने वाले व्यक्ति। इन पात्रों के माध्यम से लेखक समाज की वास्तविक परिस्थितियों को सामने लाते है।

मोहन राकेश की कहानियों का दूसरा महत्वपूर्ण पक्ष उनकी संवेदनात्मक गहराई है। उनके पात्र केवल सामाजिक परिस्थितियों के प्रतिनिधि नहीं होते, बल्कि वे अपनी भावनाओं और अनुभवों के साथ जीवित व्यक्तित्व के रूप में सामने आते हैं। उनकी कहानियों में प्रेम, पीड़ा, अकेलापन, निराशा और आशा जैसी भावनाएँ अत्यंत प्रभावशाली ढंग से व्यक्त होती हैं। वे पात्रों के मन में चल रहे विचारों और भावनाओं को सूक्ष्मता से प्रस्तुत करते हैं।

मोहन राकेश की कहनियों में यथार्थ और संवेदना का गहरा मिश्रण है,जो आधुनिक मानवीय रिश्तों ,खंडित व्यक्तित्व ,पारिवारिक विघटन और क्षणिक सुख की तलाश जैसी यथार्थवादी विषयों को दर्शाती है। मोहन राकेश की कई कहानियाँ आधुनिक जीवन की समस्याओं और मानवीय संवेदनाओं को अत्यंत प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत करती है.

मोहन राकेश की कहानियों का प्रमुख विषय मध्यवर्गीय जीवन है। मध्यवर्गीय व्यक्ति आर्थिक कठिनाईयों, सामाजिक अपेक्षाओं और व्यक्तिगत आकांक्षाओं के बीच निरंतर संघर्ष करता रहता है। मोहन राकेश की कहानियाँ "उसकी रोटी", "मिस पाल, 'एक और ज़िन्दगी', 'आर्द्रा', 'मलबे का मालिक' आदि में सामाज की इसी मध्यवर्गीय जीवन की वास्तविक स्थिति का यथार्थ रूप में चित्रण हुआ हैं। उनकी कहानियों के पात्र प्रायः इसी समाज में रहनेवाले साधारण लोग हैं—कर्मचारी, शिक्षक, गृहिणी या छोटे-मोटे काम करने वाले व्यक्ति। इन पात्रों के माध्यम से लेखक समाज की वास्तविक परिस्थितियों को सामने लाते

मोहन राकेश की कहानियों में आधुनिक जीवन के अकेलेपन का स्वर अत्यंत प्रमुख है। व्यक्ति भीड़ भरे समाज में रहते हुए भी मानसिक रूप से अकेला हो जाता है।

मोहन राकेश की प्रसिद्ध कहानी "उसकी रोटी" में पति-पत्नी के संबंधों की जटिलता और भावनात्मक दूरी का चित्रण मिलता है।'उसकी रोटी' कहानी में एक साधारण स्त्री का जीवन चित्रित किया गया है, जो प्रतिदिन अपने पति के लिए रोटी लेकर उसे देने के लिए सड़क किनारे खड़ी होकर घंटों प्रतीक्षा करती है। मगर उसका पति खुश होने की बजाय किसी न किसी बहाने उस पर गुस्सा होता है बालों का यह कथन इसी बात की पुष्टि करता है: "बालो एक-सवा एक बजे रोटी लेकर गांव से चलती थी, और धूप में आधा कोस तय करके दो बजे से पहले सड़क के किनारे पहुंच जाती थी. अगर कभी उसे दो-चार मिनट की देर हो जाती तो सुच्चासिंह किसी न किसी बहाने बस को वहां रोके रखता, मगर, उसके आते ही उसे डांटने लगता कि वह सरकारी नौकर है, उसके बाप का नौकर नहीं कि उसके इन्तज़ार में बस खड़ी रखा करे. वह चुपचाप उसकी डांट सुन लेती और उसे रोटी दे देती। " 1 यह कहानी ग्रामीण और कस्बाई परिवेश के माध्यम से मध्यवर्गीय जीवन के उस यथार्थ को दिखाती है जहां एक स्त्री के जीवन में उसकी अपनी इच्छाओं का कोई स्थान नहीं है। कहानी की नायिका बालों का पति सुच्चा सिंह एक कठोर और बेपरवाह पुरुष के रूप में दिखाया गया है, जो अपनी पत्नी की भावनाओं के प्रति संवेदनशील नहीं है। वह अपनी शर्तों पर जीवन जीता है, जिससे बालो के जीवन में खालीपन और बढ़ जाता है। 'उसकी रोटी' एक ऐसी कहानी है जो स्त्री के शोषण के पारंपरिक तरीकों से हटकर उसके मानसिक शोषण और अकेलेपन को दर्शाती है।इस कहानी में मानवीय संबंधों की जटिलता तथा व्यक्ति के भीतर चल रहे मानसिक द्वंद्व का यथार्थ चित्रण मिलता है।

'आख़िरी सामान' कहानी में भी मध्यवर्गीय जीवन की आर्थिक कठिनाइयों और मानसिक तनाव का यथार्थ चित्रण मिलता है।

मिस पाल' कहानी में एक अविवाहित शिक्षिका के जीवन का चित्रण है, जो समाज में रहते हुए भी भीतर से अत्यंत अकेली है। समाज उसकी शारीरिक बनावट का मज़ाक उड़ाता है और वह स्वयं को हर जगह "मिसफिट" महसूस करती है। अंततः वह अकेलेपन और कुंठा से घिर जाती है।मिसपाल' कहानी एक अविवाहित नारी के पारिवारिक विघटन की कहानी है। जो परंपरावादी परिवार में अपने ही माता-पिता तथा भाई-बहनों के स्नेह से वंचित होकर अपना घर नहीं बसा पाती। नौकरी तथा शरीर की स्थूलता (भारीपन) के कारण समाज उसे स्वीकार नहीं करता और वह अलगाव महसूस करती है। मिसपाल दिल्ली के सूचना विभाग में कार्यरत है, लेकिन वहाँ के वातावरण में खुद को 'मिसफिट' महसूस करती है। उसके सहयोगी उसकी शारीरिक बनावट पर व्यंग्य करते हैं। दफ्तर की गंदगी और लोगों की ओछी टिप्पणियों से तंग आकर वह नौकरी छोड़ देती है और कुल्लू मनाली चली जाती है। मिसपाल नई जगह जाकर जीवन की सार्थकता खोजने का प्रयत्न करती है । लेकिन यहाँ भी लोग उनकी कुरूपता का मजाक बनाते हैं लोगो से तंग आकर वह अपने कुत्ता कुत्ते पिंकी के साथ रहना ज्यादा पसंद कटी है "मिस पाल को लोगों से अपना पिंकी ज़्यादा अच्छा लगता है। वह ऐसे लोगों के बीच और नहीं रहना चाहती जिनका दिमाग बिल्कुल खोखला हो चुका है।"2 यह कहानी संबंधों की संवेदनहीनता को दर्शाती है ।

आधुनिक समाज में स्त्री-पुरुष के संबंधों में पिछले कुछ दशकों में महत्वपूर्ण परिवर्तन हुए हैं। पहले के समाज में इन संबंधों की नींव परंपरा, सामाजिक मर्यादा और पितृसत्तात्मक व्यवस्था पर आधारित थी। पुरुष को परिवार का मुखिया और निर्णयकर्ता माना जाता था, जबकि स्त्री को मुख्यतः घरेलू कार्यों और परिवार की देखभाल तक सीमित रखा जाता था। किंतु समय के साथ-साथ शिक्षा, औद्योगीकरण, आर्थिक विकास और सामाजिक चेतना के प्रसार ने स्त्री-पुरुष संबंधों की संरचना को बदल दिया है। आज इन संबंधों की वास्तविक स्थिति में समानता, स्वतंत्रता और व्यक्तिगत पहचान की भावना अधिक स्पष्ट रूप से दिखाई देती है।इन परिवर्तनों के साथ-साथ संबंधों की यथार्थ स्थिति में कुछ जटिलताएँ भी सामने आई । आधुनिक जीवन की व्यस्तता, कैरियर की प्रतिस्पर्धा और व्यक्तिगत स्वतंत्रता की बढ़ती भावना के कारण स्त्री-पुरुष के बीच तनाव, मतभेद और दूरी भी उत्पन्न होने लगी । पारंपरिक मूल्यों और आधुनिक विचारों के बीच संतुलन बनाना कठिन हो गया है। यही कारण है कि आधुनिक समाज में स्त्री-पुरुष संबंधों का यथार्थ एक ओर समानता और स्वतंत्रता की ओर बढ़ता दिखाई देता है, तो दूसरी ओर उसमें संघर्ष और असंतुलन के तत्व भी मौजूद ह

आधुनिक स्त्री-पुरुष संबंधों में जो यह बदलाव आया हैं उसका यथार्थ रूप मोहन राकेश की कहानियो में देखने को मिलता है। उन्होंने प्रेम और विवाह के पारंपरिक आदर्शों के स्थान पर संबंधों की जटिलता और असंतोष को प्रस्तुत किया है। 'एक और जिदगी कहानी में मोहन राकेश ने मध्यवर्गीय परिवार के स्त्री पुरुषों के बदलते रिश्तों को कहानी का विषय बनाया है मोहन राकेश ने अपनि कहानियों में शहर के मध्यवर्गीय परिवार के स्त्री पुरुषों के बदलते रिश्तों को कहानी का विषय बनाया है.इनकी 'एक और ज़िन्दगी' कहानी पति-पत्नी के बीच अहं के टकराव और टूटते संबंधों की कहानी है। कहानी के पात्र प्रकाश और बीना अपने स्वाभिमान और अहंकार के कारण एक-दूसरे से दूर हो जाते हैं।उनका बेटा पलाश अपनी माँ बीना के साथ रहता है . तलाक के बाद प्रकाश दूसरी शादी करता है, किंतु वहाँ भी उसे संतोष नहीं मिलता। 'एक और ज़िन्दगी'में जीवन के प्रति निरर्थकता बोध है ,एक और जिन्दगी की तड़प है. इस निरर्थकता बोध का कारण पारिवारिक सम्बन्धों का टूटना है. शहर का आदमी अकेला है उसे किसी से मतलब नहीं रहता है। अपने सीमित संबंधों से वह खुश नहीं रहता है फलस्वरूप अकेलापन, टूट, और घुटन उसके जीवन का अटूट हिस्सा बनकर उसे तिल-तिल कर मरने को विवश करता हैं वह इसी मकड़जाल फंसकर अपना सब कुछ समाप्त कर लेता है। संबंधों का टूटना केवल इस कहानी के पात्र प्रकाश की ही समस्या नहीं - बल्कि आज हर नारी पुरुष की समस्या है। आज शादी के कुछ ही दिन बाद पति पत्नी में अनबन हो जाती है जिससे वे अलग हो जाते हैं। वर्तमान समय में हर व्यक्ति की इच्छा, आकांक्षाएं इतनी प्रबल हो गई है कि वह उन्हें पूरा करने के लिए कुछ भी करने को तैयार रहता है फिर भी वह उसे पूरी नहीं कर पाता। इससे वह अपने मन में एक सामाजिक दबाव का अनुभव करता है । इस कहानी के माध्यम से मोहन राकेश ने आज के समाज में व्याप्त केवल

स्त्री पुरुष की समस्या को ही रेखांकित नहीं किया है बल्कि उन बच्चों की पीड़ा को भी प्रदर्शित किया है जिनके माता पिता किन्हीं कारणों से अलग हो गए जाते हैं । समाज में ऐसे बच्चे बिना किसी अपराध के माता का और परिवार के प्यार से वंचित रह जाते हैं। प्रकाश और बीना जब कोर्ट में तलाक के कागजों पर हस्ताक्षर करने वाले थे, ठीक उसी समय एक चिड़िया के बच्चे के माध्यम से लेखक ने उनके बच्चे की समस्या को उठाया है-"कोर्ट में कागज पर हस्ताक्षर करते समय छत के पंखे से टकराकर एक चिड़िया का बच्चा नीचे आ गिरा . चिड़िया मर गई. किसी ने कहा। मरी नहीं, अभी जिंदा है. कोई और बोला। चिड़िया नहीं है चिड़िया का बच्चा की तीसरे ने कहा। नहीं, चिड़िया है। नहीं चिड़िया का बच्चा है। इसे उठाकर बाहर हवा में छोड़ दो। नहीं, यहीं पा दो। बाहर इसे कोई बिल्ली विल्ली खा जाएगी। पर यह यहां आया किस तरह? जाने किस तरह? रोशनदान आ गया होगा। बेचारा कैसे तड़प रहा है। शुक्र है, पंखे ने इसे काट नहीं दिया। काट दिया होता, तो बल्कि अच्छा था । अब इस तरह लुजें पंखों से बेचारा क्या **जिएगा।"3**

उपर्युक्त विवेचन के आधारपर कहा जा सकता है कि'एक और ज़िनन्दगी' कहानी में स्त्री पात्र केवल भावनात्मक रूप से निर्भर नहीं हैं, बल्कि अपने अस्तित्व और स्वतंत्रता की तलाश करती दिखाई देती हैं। यह कहानी आधुनिक समाज में उभरती स्त्री चेतना को भी दर्शाता है।

'आर्द्रा' कहानी में जीवन की आर्थिक विडंबना और संबंधों की व्यर्थता से उत्पन्न अकेलेपन का यथार्थ निरूपण है।आर्द्रा कहानी में दो भिन्न रुचियों एवं

व्यवसाय में रहने वाले बेटों के माँ की ममता की पीड़ा की कहानी है। माँ बचन छोटे बेटे बिन्नी की अभावग्रस्त जिंदगी से परेशान है और बड़े बेटे की तबीयत को लेकर । माँ अपने दो बेटों के बीच खड़ी है— बड़ा बेटा लाली नामी वकील है तो छोटा बेटा बिन्नी बेकार और अभावग्रस्त एक माँ जो अपने दो बेटों के बीच भावनात्मक रूप से विभाजित है, वह महसूस करती है कि समृद्धि आने के साथ-साथ रिश्तों की नमी (आर्द्रा) खत्म हो गई है। जब माँ बड़े बेटे लाली के घर जाती है तो वहाँ उसका मन नहीं लगता .वहाँ घर में कोई काम नहीं रहता .सारे काम करने के लिए नौकर हैं फिर भी वहाँ उसका मन नहीं लगता वह स्वयं को वहाँ एक अजनवी और 'मेहमान' की तरह महसूस करती है। वह वहाँ के वातावरण से दो दिनों में ही ऊब जाती है और उसे अजनबीपन का अहसास होता है। **"उसे आज इस बात की उलझन हो रही थी कि उसका भजन में मन क्यों नहीं लगता... आसन पर बैठने से ही वह क्यों जी चुराती थी?'4** यह स्थिति आधुनिक जीवन की विडंबना को प्रकट करती है, जहाँ संबंध बाहरी रूप से बने रहते हैं लेकिन भीतर से टूटने लगते है कहानीकार ने यहाँ नगर परिवेश में व्यर्थ होते संबंधों और अजनबीपन को ढोती जिंदगी का यथार्थ चित्रण किया है।

मोहन राकेश की कहानियों का एक महत्वपूर्ण पक्ष उनका मनोवैज्ञानिक विश्लेषण है। वे अपने पात्रों के मन में चल रहे विचारों और भावनाओं को अत्यंत सूक्ष्मता से प्रस्तुत करते हैं.

'मलबे का मालिक' कहानी भारत-विभाजन की पृष्ठभूमि पर आधारित है। यहाँ यथार्थ केवल राजनीतिक नहीं, बल्कि मानवीय संवेदना का है। गनी मियाँ जब अमृतसर आते हैं, तो वे केवल अपना घर नहीं, बल्कि अपनी स्मृतियाँ ढूँढ रहे होते हैं।

मोहन राकेश ने अपनी कहानियों में संबंधों की यंत्रणा और अकेलेपन को बखूबी उकेरा है.ऐसा अकेलापन जिसमें समाज में रहने के बावजूद भी व्यक्ति अपने आप को अकेला महसूस करता है. राकेश जी ने यह अकेलापन अलग-अलग परिवेश के माध्यम से अपनी कहानियों में अंकित किया है। मानसिक अंतद्वंद्व , आपसी संबंध का टकराव, और साम्प्रदायिक विद्वेष तथा विभाजन का दर्द भी इनकी कहानियों में सुनाई देता है। 'मलबे का मालिक' कहानी एक ऐसी ही कहानी है जिसमें मानवीय मूल्यों का विघटन ,व्यक्तिगत स्वार्थ वृत्ति के चलते होता है. केवल संपत्ति के लिए अपनी इंसानियत और सामाजिक संबंध कुचला जाता है। 'मलबे का मालिक कहानी इन्हीं सामाजिक संबंधों के बिखराव को प्रस्तुत करती है।

'मलबे का मालिक' कहानी में विस्थापन, व्यक्तिगत स्वार्थ, हिंसा, विश्वासघात और मानवीय मूल्यों का हनन दिखाई देता है। यहाँ संवेदना मलबे के नीचे दबी हुई इंसानियत है ।

मोहन राकेश की भाषा सरल, स्वाभाविक और प्रभावशाली है। वे साधारण भाषा में गहरी बात कहने की क्षमता रखते हैं। उनकी कथन शैली में प्रतीकात्मकता और मनोवैज्ञानिक विश्लेषण का प्रभावी प्रयोग मिलता है।

निष्कर्ष

मोहन राकेश की कहानियों में यथार्थ और संवेदना का अद्भुत समन्वय दिखाई देता है। उन्होंने आधुनिक जीवन की जटिलताओं, मध्यवर्गीय समाज की समस्याओं और मानवीय संबंधों की टूटन को अत्यंत प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत किया है। उनकी कहानियाँ केवल घटनाओं का वर्णन नहीं करतीं, बल्कि मनुष्य के आंतरिक जीवन और उसकी भावनात्मक संवेदनाओं को भी गहराई से व्यक्त करती हैं।इसी कारण मोहन राकेश की कहानियाँ आधुनिक हिंदी कहानी के विकास में अत्यंत महत्वपूर्ण मानी जाती हैं।

संदर्भ सूची (Bibliography)

1. मोहन राकेश – मोहन राकेश की सम्पूर्ण कहानियाँ, राजपाल प्रकाशन संस्करण 1984 पृo संo 232

2 . वही पृo संo 13

3. वही पृo संo 279

4 . वही पृo संo 48

Copyright & License:

© Authors retain the copyright of this article. This work is published under the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY 4.0), permitting unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited.